

## हरियाणा की ऐतिहासिक नगरी 'राखीगढ़ी' को मलिंगी अंतरराष्ट्रीय पहचान

### चर्चा में क्यों?

10 सितंबर, 2022 को मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्‌टर ने राखीगढ़ी में नरिमाणाधीन म्यूजियम भवन में इस क्षेत्र को पुरातत्त्व स्थल के रूप में वकिसति करने के संबंध में अधिकारियों को नरिदेश दिये।

### प्रमुख बडि

- मुख्यमंत्री ने भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के अधिकारियों को नरिदेश दिये कि राखीगढ़ी में संरक्षित साइट की खुदाई के कार्य को तेज़ गति से पूरा किया जाए। साथ ही, इन ऐतिहासिक साइट्स की सुरक्षा भी सुनिश्चित की जाए, ताकि कोई व्यक्ति इन साइट्स को नुकसान न पहुँचा पाए।
- सधु घाटी सभ्यता का ऐतिहासिक नगर 'राखीगढ़ी' को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिये सरकार द्वारा राखीगढ़ी में म्यूजियम का नरिमाण करवाया जा रहा है, जिसमें लगभग 5 हजार वर्ष पुरानी सधु घाटी सभ्यता की कलाकृतियों को सहेज कर रखा जाएगा।
- राखीगढ़ी के पर्यटन स्थल के तौर पर वकिसति होने से एक ओर जहाँ पर्यटन बढ़ेगा, वहीं हरियाणा के राजस्व में भी वृद्धि होगी और यहाँ पर्यटकों के आने से गाँव के युवाओं के लिये रोजगार के अवसर भी सृजित होंगे।
- राखीगढ़ी में बन रहे इस म्यूजियम में फोटोग्राफ्स लैब्स तैयार की गई है, जिसमें चित्रों के माध्यम से आगंतुक राखीगढ़ी के इतिहास को जान सकेंगे। इसके अलावा, म्यूजियम में कडिस ज़ोन भी बनाया गया है। पहली बार हरियाणा में कसिी म्यूजियम में कडिस ज़ोन का नरिमाण करवाया गया है, ताकि बच्चे भी खेल-खेल में अपने इतिहास से अवगत हो सकें।
- इसके अलावा ओपन एयर थिएटर, गैलरी, पुस्तकालय का नरिमाण भी करवाया गया है, जिससे आगंतुक, वशिषतौर पर युवा पीढ़ी को इतिहास की जानकारी मलिंगी।
- गौरतलब है कि केंद्र सरकार ने देश में पर्यटन स्थलों व पाँच ऐतिहासिक स्थल बनाने के लिये 2500 करोड़ रुपए की घोषणा की थी, उनमें राखीगढ़ी भी शामिल है। प्रदेश सरकार भी यहाँ 32 करोड़ रुपए की लागत से अत्याधुनिक संग्रहालय बना रही है। इसमें रेस्ट हाउस, हॉस्टल और एक कैफे का नरिमाण किया जा रहा है।
- उल्लेखनीय है कि राखीगढ़ी हरियाणा के हिसार ज़िले के नारनौद उपमंडल में स्थित है। यहाँ राखीखास और राखीशाहपुर गाँवों के अलावा आसपास के खेतों में पुरातात्विक साक्ष्य फँले हुए हैं। राखीगढ़ी में सात टीले (आरजीआर-1 से लेकर आरजीआर-7) हैं। ये मलिकर बस्ती बनाते हैं, जो हड़प्पा सभ्यता की सबसे बड़ी बस्ती है।
- भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने इस गाँव में पहली बार 1963 में खुदाई शुरू की थी। इसके बाद 1998-2001 के बीच डॉ. अमरेंद्रनाथ के नेतृत्व में एएसआई ने फरि खुदाई शुरू की। बाद में पुणे के डेकन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वसंत शदि के नेतृत्व में 2013 से 2016 व 2022 में राखीगढ़ी में उत्खनन कार्य हुआ।
- राखीगढ़ी में 1998 से लेकर अब तक 56 कंकाल मलिंगे हैं। इनमें 36 की खोज प्रो. शदि ने की थी। टीला संख्या-7 की खुदाई में मलिंगे दो महिलाओं के कंकाल करीब 7,000 साल पुराने हैं। दोनों कंकालों के हाथ में खोल (शैल) की चूड़ियाँ, एक तांबे का दर्पण और अर्ध कीमती पत्थरों के मनके भी मलिंगे हैं। खोल की चूड़ियों की मौजूदगी से यह संभावना जताई जा रही है कि राखीगढ़ी के लोगों के दूरदराज के स्थानों के साथ व्यापारिक संबंध थे।
- प्रो. शदि के अनुसार राखीगढ़ी में पाई गई सभ्यता करीब 5000-5500 ई.पू. की है, जबकि मोहनजोदड़ो में पाई गई सभ्यता का समय लगभग 4000 ई.पू. माना जाता है। मोहनजोदड़ो का क्षेत्र करीब 300 हेक्टेयर है, जबकि राखीगढ़ी 550 हेक्टेयर से ज़्यादा क्षेत्र में फैला है।
- प्रो. शदि के अनुसार प्राचीन सभ्यता के साक्ष्यों को सँजोए राखीगढ़ी में मलिंगे प्रमाण इस ओर भी इशारा करते हैं कि व्यापारिक लेन-देन के मामले में भी यह स्थल हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से ज़्यादा समृद्ध था।
- अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, गुजरात और राजस्थान से इसका व्यापारिक संबंध था। खासतौर पर आभूषण बनाने के लिये लोग यहाँ से कच्चा माल लाते थे, फरि इनके आभूषण बनाकर इन्हीं जगहों में बेचते थे। इस सभ्यता के लोग तांबा, कार्नेलियन, अगेट, सोने जैसी मूल्यवान धातुओं को पघिलाकर इनसे नक़्शीदार मनके की माला बनाते थे। पत्थरों या धातुओं से जेवर बनाने के लिये भट्टियों का इस्तेमाल होता था। इस तरह की भट्टियाँ भारी मात्रा में मलिंगे हैं। यहाँ मलिंगे कंकालों का डीएनए परीक्षण चल रहा है।

